SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का उनके आत्मविश्वास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

नीतू सिंह, शोधार्थी, **रविन्द्र गुलाबराजी भेंडे,** Ph.D., शोध निर्देशक, शिक्षा विभाग
देव संस्कृति विश्वविद्यालय, ग्राम–सांकरा जिला–दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
नीतू सिंह, शोधार्थी,
रविन्द्र गुलाबराजी भेंडे, Ph.D.

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 19/12/2023
Revised on : -----
Accepted on : 26/12/2023
Plagiarism : 01% on 19/12/2023

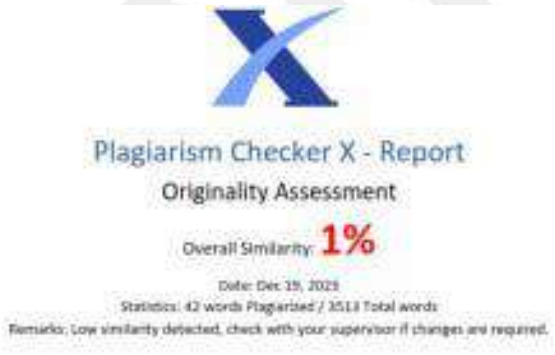

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र में बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का उनके आत्मविश्वास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया। शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का उनके आत्मविश्वास पर कितना प्रभाव पड़ता है देखा गया है जिसमें कि सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति के मापन के लिए आ.पी. शुक्ला द्वारा निर्मित मापनी एवं आत्मविश्वास मापन के लिए डॉ.रेखा गुप्ता द्वारा निर्मित मापनी का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में 120 बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया है। चयनित प्रशिक्षणार्थियों पर उपरोक्त उपकरण का प्रशासन करके उनके प्राप्तांक ज्ञात किये गये तथा उसके आधार पर परिकल्पनाओं के सत्यापन के लिए सह–संबंध ज्ञात किया गया। निष्कर्ष में ज्ञात होता है कि बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का उनके आत्मविश्वास पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक सहसंबंध नहीं पाया गया। इसका कारण यह हो सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं एवं शहरी क्षेत्र के बी.एड. महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं में आत्मविश्वास से शिक्षण का विकास होता है।

मुख्य शब्द

सृजनात्मक, जागरूकता, आत्मविश्वास, तुलनात्मक.

प्रस्तावना

शिक्षा किसी मनुष्य की अंतर्निहित शक्तियों का विकास है। शिक्षा द्वारा ही मनुष्य अपनी शक्तियों को व्यवहार में लाता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक मनुष्य निरंतर सीखता है। सीखने की इस प्रक्रिया के परिणाम स्वरूप उसे अनुभव प्राप्त होता है। किसी भी राष्ट्र की

अमूल्य निधि वहाँ की शिक्षा होती है। आज विश्व का प्रत्येक देश रक्षा के पश्चात् शिक्षा पर अधिक खर्च करता है, क्योंकि शिक्षा राष्ट्र को सुसमृद्ध एवं विकासशील बनाने में अहम् भूमिका अदा करती है। शिक्षा एक ऐसी ताकत है जो मनुष्य बनाने में मददगार सिद्ध होती है। यह देश के नागरिकों पर अपना विशेष प्रभाव किसी न किसी मूल्य के रूप में डालती है। यह तभी संभव हो सकता है, जब राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित एवं प्रशिक्षित किया जाये। उन समस्त व्यक्तियों को सुशिक्षित करने की जिम्मेदारी योग्य एवं कुशल शिक्षकों के कंधे पर होता है। एक अच्छा शिक्षक वहीं है जो जीवनपर्यंत कुछ न कुछ अधिगम करते रहता है, उसे सदैव विद्यार्थी बनकर रहने में विशेष आनंद की प्राप्ति होती है। सृजनात्मक शिक्षा अभिवृत्ति शिक्षक की वह मनोदशा है जिसे वह शिक्षण–अधिगम की स्थितियों में रचनात्मक दृष्टिकोण द्वारा व्यक्त करता है। जो उसकी जिज्ञासा, मौलिकता, विचार प्रवाह, कल्पनाशीलता तथा समस्या के प्रति संवेदनशीलता आदि विशिष्ट स्वभाविक गुणों के रूप में प्रकट होती है। कुछ सार्थक नवीन ओर अनोखी सोच व अनोखा करने की क्षमता ही सृजनात्मकता कहलाती है, किन्तु यह तभी सार्थक सिद्ध होगी जब इस अनोखी सोच में उपयोगिता का गुण विद्यमान होगा। केवल शिक्षक का पद मिल जाने से एक प्रभावशाली शिक्षक नही बन जाता है, उन्हें कई प्रकार की अलग–अलग किरदारों को एक साथ निभाना पड़ता है जैसे– अभिभावक, नेतृत्वकर्ता, पथनिर्देशक, सलाहकार, सहयोग करने वाला मित्र इत्यादि भूमिकाओं को निभाना अपने शिक्षार्थियों एवं समाज के लिए करता है। इन्ही भूमिकाओं को सुगम तरीके से निभाने की कुशलता ही शिक्षकों में आत्मविश्वास पैदा करती है, परंतु वर्तमान परिवेश में शिक्षक की भूमिका में कमी दृष्टिगोचर होती है। केवल शिक्षक बनने और शिक्षक होने में बहुत भेद है। शिक्षक होने का आशय शिक्षकीय गुणों को धारण करना होता है जिसे शिक्षकत्व कहा गया है। सुधाकर व रेड्डी (2017) ने अपने अध्ययन में यह पाया कि शिक्षण पेशे के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण नकारात्मक या सकारात्मक रूप से छात्रों की शैक्षिक सफलता और पठन–पाठन में प्रत्याशा को प्रभावित करता है। शिक्षण के प्रति शिक्षक का दृष्टिकोण, सीखने की दिशा में छात्रों के दृष्टिकोण को आकार देने में एक प्रमुख भूमिका निभाता है। सृजनात्मक प्रतिभा की पहचान राष्ट्रीय जनशक्ति के अनिवार्य स्रोत के रूप में वैज्ञानिक एवं तकनीकी उपलब्धियों एवं खोज में वास्तविक तौर पर एक उभरता हुआ सवाल है। सृजनात्मकता को विज्ञान के अनुदान क्षेत्र के विस्तार का आधार माना है, अर्थात जितना सृजनात्मक अनुदान है, उतना अधिक उसका प्रभाव भी है। (जैन 2011) इस तरह शिक्षकत्व उन गुणों की ओर संकेत करता है। इस हेतु शिक्षकत्व के गुणों के साथ ही साथ एक महत्वपूर्ण गुण का होना अनिवार्य है वह है शिक्षक का आत्मविश्वास।

सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति

शिक्षक की वह मनोदशा जिसे वह शिक्षण अधिगम की स्थितियों में रचनात्मक दृष्टिकोण द्वारा व्यक्त करते है जो उसकी जिज्ञाषा, मौलिकता, विचार प्रवाह, कल्पनाशीलता तथा समस्या के प्रति संवेदनशीलता आदि विशिष्ट स्वभाविक गुणों के रूप में प्रकट होती है। जिनको वह अन्य व्यक्तियों में खोजने एवं पोषित करने में खुशी व्यक्त करता है। ऐसे अध्यापक शिक्षण कार्य में निपुण एवं तथ्यों की वास्तविक रूप से गहन अन्वेषण करने की इच्छा रखते है। पेशेवर क्षमता विकास के लिये कभी–कभी शिक्षक स्व–मूल्यांकन द्वारा अपनी कमियों का विश्लेषण करता है, तथा उनसे छुटकारा पाने के लिए अपनी मनोवृत्ति एवं धारणा में सुधार लाने का प्रयास करता है।

सिम्पसन ने परिभाषित किया कि सृजनात्मक अभिवृत्ति जन्मजात रूप से ऐसी शक्ति है जो व्यक्ति को सामान्य अनुक्रम से हटकर उसके असामान्य क्रम को तोड़ने की क्षमता है जिससे वह दूसरों से अलग अनोखा नजरिया प्रस्तुत करता है।

आत्मविश्वास

आत्म विश्वास से आशय स्वयं पर विश्वास एवं नियंत्रण से है जिसका अर्थ स्वयं की शक्ति एवं योग्यता व कुशलता पर विश्वास। सामान्य अर्थ में आत्मविश्वास का अर्थ अपने आप पर विश्वास व अपनी आत्मा पर भरोसा करना है। (जैन, 2015) एक आत्मविश्वास से परिपूर्ण शिक्षक अपने शैक्षणिक गतिविधियों में अधिक कामयाब होता है। आत्मविश्वास से ओतप्रोत शिक्षक अपने शैक्षणिक आशावादी, विश्वसनीय तथा जीवन में संतुष्ट होता है। इसके

अलावा आत्मविश्वास से परिपूर्ण शिक्षक शैक्षणिक क्षेत्रों एवं विद्यार्थियों के जीवन में आने वाली कई प्रकार की कठिनाईयों को निवारण सुगमता से कर देता है।

स्वेट मार्डेन के अनुसार "आत्मविश्वास का शाब्दिक अर्थ है कि स्वयं में विश्वास। यह विश्वास कि मैं समर्थ हूँ, सह विश्वास कि मैं शक्तिशाली हूँ, यह विश्वास कि मैं कुछ कर सकता हूँ, यही है आत्मविश्वास।"

इमरसन, आर, डब्ल्यू के शब्दों में आत्मविश्वास को परिभाषित करते हुए लिए है कि आत्मविश्वास से तात्पर्य "स्वयं पर विश्वास।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि किसी भी कार्य की कामयाबी हेतु आत्मविश्वास अत्यधिक कारगर सिद्ध होता है। किसी शिक्षक का आत्मविश्वास उसकी सबसे बड़ी अन्तर्निहित शक्ति है। वर्तमान परिवेश में किसी भी कार्य का करने हेतु आत्मविश्वास मील का पत्थर समझा जा सकता है। आत्मविश्वास से युक्त शिक्षक अपने शिक्षार्थियों की भविष्य की सफलता का पर्याय है।

संबंधित शोध अध्ययन

- **ली (2005)** ने 4–5 वर्ष के सृजनात्मक चिंतन क्षमता और सृजनात्मक व्यक्तित्व के मध्य संबंध का अध्ययन किया और पाया कि छोटे बच्चों में कल्पना और प्रवाह का उत्सुकता, स्वतंत्रता, रिस्क तथा गृहकार्य इत्यादि में सार्थक संबंध है अतः इसके माध्यम से जन्मजात प्रतिभा का पता लगा कर शिक्षा कार्यक्रम का विकास किया जा सकता है।
- **रेड्डी (2008)** ने गणित की उपलब्धि और सृजनात्मकता में संबंध में अध्ययन किया और पाया कि छात्राएँ, छात्रों की अपेक्षा अधिक सृजनशील होते है तथा अशासकीय विद्यालय के छात्र शासकीय विद्यालय की अपेक्षा अधिक सृजनशील होते है।
- **गसपर (2011)** ने रोमानिया के शिक्षकों के सृजनात्मक व्यवहार का छात्रों के सृजनात्मक व्यवहार पर प्रभाव पर अध्ययन किया और पाया कि शिक्षकों की सृजनशील बनाने में महत्वपूर्ण निभाते है। बच्चों का सृजनात्मक व्यक्तित्व शैक्षिक लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक होते है।
- **सिंह, प्रतिमा (2014)** ने वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों में समायोजन, जीवन संतुष्टि एवं आत्मविश्वास की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में उत्तप्रदेश के वाराणसी मण्डल में वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों से 600 शिक्षकों का चयन यादृच्छिक विधि से किया। आत्मविश्वास मापन के लिए रेखा अग्निहोत्री द्वारा निर्मित आत्मविश्वास मापनी का उपयोग किया गया। परिणाम में प्राप्त हुआ कि वित्तपोषित महाविद्यालय के शिक्षकों की अपेक्षा स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षक अधिक आत्मविश्वासी है। स्ववित्तपोषी महाविद्यालयों के पिछड़ें वर्ग के शिक्षकों की अपेक्षा सामान्य वर्ग के शिक्षक अधिक आत्मविश्वासी थे।
- **मलिक, उपेन्द्र एवं योगेश (2016)** ने ए स्टडी ऑफ इफेक्ट ऑफ सेल्फ कॉफिडेन्स ऑन एकेडेमिक एचीवमेंट से संबंधित सीनियर सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेंट शोध कार्य किया। प्रस्तुत अध्ययन में यादृच्छिक विधि से 11वीं के 200 छात्रों का चयन न्यादर्श हेतु कियाद्य। आत्मविश्वास मापन हेतु डॉ. रेखा अग्निहोत्री द्वारा निर्मित आत्मविश्वास मापनी का उपयोग किया गया। एकत्रित प्रदत्तों के विश्लेषण के परिणामों से स्पष्ट होता है उच्च व निम्न आत्मविश्वास वाले 11वीं कक्षा के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। उच्च एवं निम्न आत्मविश्वास वाले 11वीं कक्षा के छात्राओं की शैक्षिक उपलबिध में कोई सार्थक अंतर नही है।
- **शुक्ला, दीपक (2016)** ने 'बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर शोधकार्य किया। न्यादर्श के रूप में इन्होंने ग्वालियर शहर के दो अशासकीय शिक्षा महाविद्यालय से 100 प्रशिक्षणार्थियों का यादृच्छिक विधि से किया। प्रदत्तों के संकलन हेतु डॉ. रेखा गुप्ता निर्मित आत्मविश्वास मापनी का उपयोग किया गया। निष्कर्ष दर्शाते है कि महिला प्रशिक्षणार्थी एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थी के आत्मविश्वास के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

- **रामनिवास एवं नौटियाल (2017)** ने द्विवर्षीय नवीन बी.एड. पाठ्यक्रम के छात्राध्यापकों की शिक्षण के प्रति सृजनात्मक मनोवृत्ति एवं शिक्षण सक्षमता का अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु विद्यालयों में शिक्षण अभ्यास करने वाले 132 छात्राध्यापकों का चयन साधारण यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा कला एवं विज्ञान वर्ग द्वारा किया गया। आँकड़ों का संकलन डॉ. बी.के. पॉसी एवं डॉ. एम.एस. ललिता की मानकीकृत सामान्य शिक्षण सक्षमता मापनी तथा डॉ. आर.पी. शुक्ला के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति मापनी उपकरणों का प्रयोग आँकडों के संकलन में किया गया। प्राप्त निष्कर्ष द्वारा विदित हुआ है कि– कला एवं विज्ञान छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता में समानता लेकिन सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति के मध्यमान स्तर में सार्थक अंतर पाया गया। कला वर्ग के छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक अभिवृत्ति के मध्य सकारात्मक अनुबन्ध है।
- **अनिल एवं आराधना (2019)** ने माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के आत्मविश्वास का अध्ययन किया। अध्ययन हेतु म.प्र. राज्य के मंदसौर जिले के एम.पी.बोर्ड एवं सीबीएसई बोर्ड के माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के समग्र में से 199 शिक्षकों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया। आत्मविश्वास मापने हेतु स्वनिर्मित शिक्षक आत्मविश्वास मापनी का प्रयोग किया गया। अध्ययन के परिणाम में पाया गया कि माध्यमिक स्तर पर कार्यरत लिंग के आधार पर महिला एवं पुरूष शिक्षकों के आत्मविश्वास में कोई सार्थक अंतर नही है। विद्यालयीन प्रकार के आधार पर अशासकीय शिक्षकों की अपेक्षा शासकीय शिक्षकों में आत्मविश्वास अधिक पाया गया एवं विद्यालयीन क्षेत्र के आधार पर ग्रामीण शिक्षकों की अपेक्षा शहरी क्षेत्र के शिक्षकों में आत्मविश्वास अधिक पाया गया।
- **प्रभोश पी. (2019)** ने बी.एड. एवं डी.एल.एड. विद्यार्थियों का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया। अध्ययन हेतु 100 शिक्षक–प्रशिक्षुओं को न्यादर्श हेतु चयन किया गया। आंकडों के संकलन हेतु एस.पी. अहलुवालिया की शिक्षण अभिवृत्ति परिसूची का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष से पता चला कि बी.एड. और डी. एल.एड. विद्यार्थियों में शिक्षण अभिवृत्ति में कोई अंतर नही है।

संबंधित शोध अध्ययन की समीक्षा

ली (2005) ने अध्ययन में पाया कि छोटे बच्चों में कल्पना और प्रवाह का उत्सुकता, स्वतंत्रता, रिस्क तथा गृहकार्य इत्यादि में सार्थक संबंध है। रेड्डी (2008) ने पाया कि छात्राएँ, छात्रों की अपेक्षा अधिक सृजनशील होते है तथा अशासकीय विद्यालय के छात्र शासकीय विद्यालय की अपेक्षा अधिक सृजनशील होते है। गसपर (2011) ने निष्कर्ष में प्राप्त किया कि शिक्षकों की सृजनशील बनाने में महत्वपूर्ण निभाते है। बच्चों का सृजनात्मक व्यक्तित्व शैक्षिक लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक होते है। सिंह, प्रतिमा (2014) द्वारा परिणाम में प्राप्त हुआ कि वित्तपोषित महाविद्यालय के शिक्षकों की अपेक्षा स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षक अधिक आत्मविश्वासी है। स्ववित्तपोषी महाविद्यालयों के पिछड़ें वर्ग के शिक्षकों की अपेक्षा सामान्य वर्ग के शिक्षक अधिक आत्मविश्वासी थे। मलिक, उपेन्द्र एवं योगेश (2016) ने के परिणामों से स्पष्ट होता है उच्च व निम्न आत्मविश्वास वाले 11वीं कक्षा के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। उच्च एवं निम्न आत्मविश्वास वाले 11वीं कक्षा के छात्राओं की शैक्षिक उपलबिध में कोई सार्थक अंतर नही है। शुक्ला, दीपक (2016) के निष्कर्ष दर्शाते है कि महिला प्रशिक्षणार्थी एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थी के आत्मविश्वास के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया। रामनिवास एवं नौटियाल (2017) के परिणाम में कला एवं विज्ञान छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता में समानता लेकिन सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति के मध्यमान स्तर में सार्थक अंतर पाया गया। अनिल एवं आराधना (2019) ने अध्ययन के परिणाम में पाया गया कि माध्यमिक स्तर पर कार्यरत लिंग के आधार पर महिला एवं पुरूष शिक्षकों के आत्मविश्वास में कोई सार्थक अंतर नही है। प्रभोश पी. (2019) ने निष्कर्ष से पता चला कि बी.एड. और डी.एल.एड. विद्यार्थियों में शिक्षण अभिवृत्ति में कोई अंतर नही है।

अध्ययन की आवश्यकता

अध्यापक की अभिवृत्ति में सृजनात्मक शिक्षण की धारणा कक्षा में विद्यार्थियों के पाठ्यवस्तु को सीखने व समझने के प्रति सजग व संवेदनशील बनाती है जिससे वे बुद्धिमत्तापूर्वक अपने प्रयासों एवं चिन्तन को स्वोपक्रमों में

अपनाते है तथा दैनिक जीवन में सार्थक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। 21वीं शताब्दी में जनतंत्र की बढ़ती बौद्धिक जरूरतों को पूरा करने के लिए बड़ी संख्या में स्कूलों, कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों को स्थापित किया गया है। निरन्तर बढ़ते उत्तरदायित्वों एवं सामाजिक अपेक्षाओं के मध्य शिक्षक अपनी भूमिका का निर्वहन तभी कर सकते है जब उसके प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षण सक्षमता बढ़ाने के पर्याप्त अवसर दिये जायेंगे। एक शिक्षक का शिक्षण की अन्तःक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा जगत में शिक्षक की भूमिका विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक एवं सामाजिक विकास हेतु महत्वपूर्ण मानी जाती है। छात्रों का यह प्रभावशाली विकास शिक्षकों की उत्तम शैक्षिक क्रियाकलापों पर निर्भर है वे अपने शैक्षिक क्रिया के अंतर्गत करते है। परंतु आज के समय में शिक्षकों की इन भूमिकाओं में कमी दिखाई देती है जिसमें शिक्षण का स्तर दिन–प्रतिदिन गिरता जा रहा है। इसके साथ ही शिक्षण के दरमियान शिक्षकों में आत्मविश्वास की कमी दिखाई देती है। इसी आत्मविश्वास की कमी के कारण स्कूल में अनुशासनहीनता, छात्र अशांति जैसी अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इस प्रकार के विभिन्न समस्याओं का अध्ययन करने हेतु शोधार्थी ने इस विषय का चयन कर शोध अध्ययन करने हेतु निश्चय किया।

अध्ययन का उद्देश्य

- बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का उनके आत्मविश्वास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
- ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का उनके आत्मविश्वास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
- शहरी क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का उनके आत्मविश्वास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

अनुसंधान विधि

प्रस्तुत अध्ययन में परिकल्पना के परीक्षण हेतु आंकड़ें एकत्र करने के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

अध्ययन में परिकल्पनाओं के विश्लेषण के लिए दुर्ग जिले के 120 बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का चयन यादृच्छिक रूप से न्यादर्श हेतु किया गया है जिसमें 60 बी.एड. प्रशिक्षणार्थी ग्रामीण क्षेत्रों के तथा 60 बी.एड. प्रशिक्षणार्थी शहरी क्षेत्रों के चयन किये गये।

परिसीमा

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन दुर्ग जिले के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों तक सीमित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन 120 बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों तक सीमित किया गया है जिसमें 60 ग्रामीण तथा 60 शहरी क्षेत्रों तक शामिल किया गया हैं

सांख्यिकीय विश्लेषण

शून्य परिकल्पना से प्राप्त प्रदत्तों को विश्लेषण करने हेतु मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन ज्ञात कर सार्थकता ज्ञात करने के लिए सह–संबंध गुणांक का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पना परिणाम व विश्लेषण

प्रस्तुत शोध की समस्या दुर्ग जिले के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों से प्राप्त आंकड़ों की व्याख्या विश्लेषण एवं निष्कर्ष हेतु परिकल्पना का सत्यापन किया गया।

परिकल्पना

H_{01}: बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का उनके आत्मविश्वास पर पड़ने वाले प्रभाव पर सहसंबंध नही पाया जायेगा।

उपर्युक्त परिकल्पना की सत्यता की जाँच करने के लिए शोधार्थी द्वारा बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति एवं आत्मविश्वास का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन ज्ञात कर सह–संबंध ज्ञात किया। प्राप्त मध्यमान, प्रमाणिक विचलन व सह–संबंध को निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

सारणी क्रमांक 1: बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों से प्राप्त आँकड़ें

तुलनात्मक	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	सह–संबंध गुणांक
सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति	120	23.44	0.15
आत्मविश्वास		30.63	
df = 118, P > 0.05 सार्थक सह–संबंध नही पाया गया।			

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि सुजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का मध्यमान 23.44 एवं आत्मविश्वास का मध्यमान 30.63 तथा दोनों संहसंबंध का मान 0.15 प्राप्त हुआ जोकि स्वतंत्रता का अंश 118 का 0.05 स्तर पर विश्वसनीय स्तर पर सार्थक संबंध नही पाया गया। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

H_{02}: ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का उनके आत्मविश्वास पर पड़ने वाले प्रभाव पर सहसंबंध नही पाया जायेगा।

उपर्युक्त परिकल्पना की सत्यता की जाँच करने के लिए शोधार्थी द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों (छात्र–छात्राओं) के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति एवं आत्मविश्वास का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन ज्ञात कर सह–संबंध ज्ञात किया। प्राप्त मध्यमान, प्रमाणिक विचलन व सह–संबंध को निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

सारणी क्रमांक 2: ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों से प्राप्त आँकड़ें

तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	सह–संबंध गुणांक
ग्रामीण छात्र/छात्राओं के सृजनात्क शिक्षण अभिवृत्ति	60	25.10	0.29
ग्रामीण छात्र/छात्राओं के आत्मविश्वास		30.96	
df = 58, P >0.05 सार्थक सह–संबंध नही पाया गया।			

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण छात्र/छात्राओं के सृजनात्क शिक्षण अभिवृत्ति का मध्यमान 25.10 एवं आत्मविश्वास का मध्यमान 30.96 तथा दोनों संहसंबंध का मान 0.29 प्राप्त हुआ जोकि स्वतंत्रता का अंश 58 का 0.05 स्तर पर विश्वसनीय स्तर पर सार्थक संबंध नही पाया गया। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

H_{03}: शहरी क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का उनके आत्मविश्वास पर पड़ने वाले प्रभाव पर सहसंबंध नही पाया जायेगा।

उपर्युक्त परिकल्पना की सत्यता की जाँच करने के लिए शोधार्थी द्वारा शहरी क्षेत्रों के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों (छात्र–छात्राओं) के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति एवं आत्मविश्वास का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन ज्ञात कर सह–संबंध ज्ञात किया। प्राप्त मध्यमान, प्रमाणिक विचलन व सह–संबंध को निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

सारणी क्रमांक 3: शहरी क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों से प्राप्त आँकड़ें

तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	सह–संबंध गुणांक
शहरी छात्र/छात्राओं के सृजनात्क शिक्षण अभिवृत्ति	60	21.51	0.64
शहरी छात्र/छात्राओं के आत्मविश्वास		50.05	
df = 58, P <0.05 सार्थक सह–संबंध पाया गया।			

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि शहरी छात्र/छात्राओं के सृजनात्क शिक्षण अभिवृत्ति का मध्यमान 21.51 एवं आत्मविश्वास का मध्यमान 50.05 तथा दोनों का संहसंबंध का मान 0.64 प्राप्त हुआ जोकि स्वतंत्रता का अंश 58 का 0.05 स्तर पर विश्वसनीय स्तर पर सार्थक संबंध पाया गया। अतः परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

विवेचना

उपर्युक्त परिकल्पनाओं के विश्लेषण एवं उनसे प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह स्पष्ट है कि बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्तिपर उनके आत्मविश्वास पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नही पाया गया। इसका कारण यह हो सकता है कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण के प्रति जागरूकता है एवं उनमें सृजनात्मक शिक्षण का विकास होता है इससे आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

सुझाव

प्रस्तुत शोध में प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर बी.एड. महाविद्यालय में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों के समस्याओं के क्षेत्र में निम्न सुझाव दिया जा सकते हैः

- ग्रामीण क्षेत्रों में बी.एड. महाविद्यालयों की स्थापना की जाए जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले विद्यार्थी अपने क्षेत्र में ही रहकर प्रशिक्षण प्राप्त करें।
- बालिकाओं के लिए और भी पृथक से बी.एड. महाविद्यालय की स्थापना की जाए जिससे बालिकाएँ सहज रूप से बी.एड. की शिक्षा प्राप्त कर सकें।
- बी.एड. प्रशिक्षण में प्रशिक्षणार्थियों को किताबी ज्ञान के अलावा कलाओं का प्रशिक्षण, शिक्षा के नए क्रियाकलापों पर ध्यान दिया जाए।
- शिक्षण पद्धति का उपयोग करा जाए तथा शिक्षण पद्धति विद्यार्थियों के अनुकूल होनी चाहिए।

अनुकरणीय अध्ययन

शोधकर्त्ता द्वारा चयन की गई समस्या के आधार पर निम्नलिखित क्षेत्रों में अध्ययन किये जा सकते हैः

- शासकीय व अशासकीय महाविद्यालय के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के अभियोग्यता का तुलनात्मक अध्ययन।
- अशासकीय महाविद्यालय के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में आत्मविश्वास में कमी का अध्ययन।
- ग्रामीण व शहरी महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के अभियोग्यता का उनके आत्मविश्वास पर प्रभाव का अध्ययन।
- शिक्षण संस्थानों में बी.एड. प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम की वर्तमान में प्रासंगिकता का अध्ययन।
- नवीन चार वर्षीय पाठ्यक्रम के प्रति अध्यापक और प्रशिक्षणार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन।
- द्वितीय व चार वर्षीय बी.एड. का तुलनात्मक अध्ययन।
- शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत अभियोग्यता का तुलनात्मक अध्ययन।
- ग्रामीण महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के उच्च एवं निम्न आत्मविश्वास में प्रभाव का अध्ययन।

संदर्भ सूची

1. Babu Anil & Aaradhna (2019), माध्यमिक स्तर के कार्यरत शिक्षकों के आत्मविश्वासरू एक अध्ययन, *Journal of Acharya Narendra Dev Research Institute*, 27, 197-2033
2. Malik, Upendra & Yogesh (2016), A Study of Effect of Self Confidence on Academic Achievement Among Senior Secondary School Students, *Indian Journal of Research,* 3(12), 64-67.
3. नीतू सिंह (2021), बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति पर अध्ययन, शोध संचार बुलेटिन, 11;41, 208–211
4. Nivas et.al (2017), B.Ed. Study of relationship between teaching competency and creative teaching attitude of students teachers. *International Journal of Research Granthaalayah,* 5(7), 587-597.

5. Prabhosh P. D'souza (2019), बी.एड. और डी.एल.एड.विद्यार्थियों का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, Journal of Emerging Technologies and Innovative Research, 6(4), 457-463.

6. शुक्ला, दीपक (2016), बी.एड. प्रशिणार्थियों में आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन, *शिक्षामित्र* खण्ड 8, अंक 1, 2016 स. 15—16.

7. सुनील एवं किरण (2018), उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन, *एकेडमिक सोशल रिसर्च,* 4(2), 51—54.

8. Sharma, R.K. & Dube, K. (2007), *Teacher Education,* Agra Radha Prakashan Mandir, 78-86.

9. Sharma, S. & Gupta, No. (2009), *Education Teachnology and Class Room Management,* Jaipur, Shyam Prakashan, 78-88.

10. Sharma, V. & Verma, M. (1983), *Household Art and Household Management,* International Publishing House, PP-35-37.

****